अमर उजाला

शुक्रवार | 17 अक्तूबर 2014

'गन्ने के साथ दाल, फल की खेती फायदेमंद'

लखनऊ। लोगों के पेट भरने और उनकी खाद्य-जरूरतों को पूरा करने का काम किसान करता है। इसी किसान को सबसे कम कमाई फायदे के रूप में मिलती है। इसे बढ़ाने के लिए अब आईआईएसआर के वैज्ञानिकों ने किसानों को गन्ने के साथ दाल, तेल फसलें और फलों की खेती करने का तरीका सुझाया है। गुरुवार को आईआईएसआर में विश्व खाद्य दिवस मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. फ ारुकी, भूतपूर्व निदेशक, भारतीय चारागाह अनुसंधान संस्थान रहे। वहीं निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन, निदेशक, आईआईएसआर ने कहा कि वर्ष 2014 को पारिवारिक खेती वर्ष के रूप में मना ा रहा है।

राष्ट्रीय सहारा
लखनऊ। शुक्रवार • 17 अक्टूबर • 2014

विश्व खाद्य दिवस पर गोष्ठी आयोजित

सरोजनीनगर-लखनऊ। रायबरेली रोड स्थित भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान परिसर में गुरुवार को विश्व खाद्य दिवस के मौके पर गोष्ठी आयोजित की गई। कार्यक्रम में झांसी स्थित भारतीय चारागाह अनुसंधान संस्थान के पूर्व निदेशक डा. फारूकी शोध संस्थानों द्वारा विकसित तकनीकों को किसानों तक पहुंचाने की अपील की। डा. फारूकी ने केन्द्रीय कृषि मंत्री राधा मोहन सिंह द्वारा खाद्य दिवस पर दिये गये संदेश पर अपने विचार रखते हुए इस पर अमल करने को आवश्यक प्रयास करने का अनुरोध किया। प्रशिक्षण सत्र में विभिन्न तकनीकों पर डा. सुधीर शुक्ल, डा. अरुण बैठा, डा. अनवर व डा. राकेश सिंह द्वारा प्रतिभागियों को जानकारी दी गई।

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
डेली न्यूज़
ऐक्टिविस्ट
लखनऊ, शुक्रवार, 17 अक्टूबर 2014

'गन्ना के साथ सह फसल पर किसानों की बढ़ेगी आमदनी'

उत्पादन तकनीकों को अपनाना जरूरी

डेली न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। दुनिया से भूख और कुपोषण खत्म करने के लिए विश्व खाद्य दिवस मनाया जाता है। इस आयोजन का मकसद कृषि और खाद्य उत्पादन से जुड़ी सभी वर्गों को यह संदेश देना होता है कि सभी मिलकर काम करें। इसी के मद्देनजर भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान (आईआईएसआर) में गुरूवार को विश्व खाद्य दिवस कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कार्यकम में मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय चारागाह अनुसंधान संस्थान झांसी के पूर्व निदेशक, डॉ. फारूकी मौजूद थे। सीएसआईआर के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने माननीय केंद्रीय कृषि मंत्री राधा मोहन सिंह द्वारा खाद्य दिवस पर दिए गए संदेश पर अपने विचार रखते हुए इस पर अमल करने के लिए जरूरी प्रयास करने का अनुरोध किया। वर्ष 2014 को 'पारिवारिक खेती वर्ष' के रूप में मनाया जा रहा है। इस संदेश से यह बिल्कुल स्पष्ट है कि किसान परिवार की हर जरूरत को खेती से पूरा करने के लिए उत्पादन तकनीकों को अपनाना जरूरी है। संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. एके साह ने बताया कि गन्ना के साथ सह फसल के रूप में दलहन, तिलहन, सब्जियों आदि की खेती से किसान परिवार को बड़ी मात्रा में आमदनी होगी। साथ ही घर-परिवार के लिए

> • दुनिया से भूख, कुपोषण खत्म करने के लिए मनाया जाता है विश्व खाद्य दिवस

जरूरी खाद्य पदार्थ जैसे दाल, तेल, सब्जी, फल, दूध आदि की भी जरूरत पूरी होगी। इस पारिवारिक खेती को सफल बनाने में कृषि विज्ञान केंद्रों की भूमिका अहम होगी। डॉ. साह ने कहा कि गन्ना से प्राप्त अगोला को दूधारू पशुओं के लिए हरा चारा के रूप में प्रयोग कर किसान पशुओं से ज्यादा दूध प्राप्त कर सकते हैं, जिससे उनको अधिक आमदनी होगी। इस मौके पर राज्य के कृषि विभाग व गन्ना विभाग के विकास अधिकारियों, रायपुर (छत्तीसगढ़) के किसानों और कृषि विज्ञान केंद्रों के कार्यकर्त्ताओं के लिए प्रशिक्षण सत्र का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण सत्र में डॉ. सुधीर शुक्ला, डॉ. एके. साह, डॉ. अरूण बैठा, डॉ. अनवर और डॉ. राकेश सिंह के तहत प्रतिभागियों को जानकारी प्रदान किया गया।

राइट टू फूड एंड न्यूट्रिशन वाच 2014 रिपोर्ट का हुआ लोकापर्ण

विश्व खाद्य दिवस पर अंतराष्ट्रीय मानवाधिकार संघटन फियान इंटरनेशनल, जमर्नी द्वारा राइट टू फूड एंड न्यूट्रिशन वाच 2014 रिपोर्ट का लोकापर्ण किया गया। दृष्टिबाधित संस्था एनएवीएच के अध्यक्ष एसके सिंह ने बताया कि प्रदेश में विकलांगता की सबसे बड़ी वजह कुपोषण है। 4 से 6 वर्ष आयु के 28.2 प्रतिशत बच्चों को वर्ष 2002 में प्रयाप्त कैलोरी व प्रोटीन मुहैया थी। सैंपल सर्वे रजिस्ट्रेशन सिस्टम के सर्वे के तहत एक हजार पैदा होने वाला कुपोषण प्रमुख कारणों में से एक है। फियान उप्र के अध्यक्ष संजय राय ने बताया कि नि:शक्त व्यक्ति अधिकार विधेयक 2014 की जांच करने के लिए संसद सदस्य के सभापतित्व में रमेश बैश में एक स्थाई समिति का गठन किया है।

the pioneer
LUCKNOW | FRIDAY | OCTOBER 17, 2014

World Food Day at IISR

PIONEER NEWS SERVICE ■ LUCKNOW

Indian Institute of Sugarcane Research (IISR) organised a programme to celebrate World Food Day on Thursday. The chief guest of the function was Dr SA Faruqui, former director of IGFRI (Jhansi), who appealed to the scientists and development workers to work hard for rapid transfer of agricultural technology to farmers so that they can harvest more crop per unit of resource used and contribute substantially in fighting hunger and malnutrition, especially in rural areas.

IISR director S Solomon read out the message of Union Minister of Agriculture Radha Mohan Singh. The minister in his message quoted year 2014 as the year of family farming and he emphasised on popularisation and large-scale adoption of family farming all over the country. Principal scientist AK Sah said that sugarcane might be focal crop in the theme of family farming as it provided a large amount of money to farmers at the time of harvesting and ample opportunity to grow pulses, oilseeds, vegetables, green fodder etc as inter-crops between wide row spaces in sugarcane.

Development workers of agriculture and cane departments of Uttar Pradesh, SMSs of KVKs and farmers from Raipur (Chhattisgarh) participated in the programme. A training session on cane cultivation techniques, fodder raising and animal husbandry practices was also organised.